मूर्ति विसर्जन से प्रदूषित होती नदियां

नरेन्द्र देवांगन

आस्था का सार्वजनिक प्रदर्शन अब पर्यावरण पर भारी पड़ रहा है। हर साल हमारे देश में कई स्थानों पर ज़ोर-शोर से गणेशोत्सव मनाया जाता है और उसके बाद जगह-जगह दुर्गा पूजा का आयोजन होता है। एक मोटे अनुमान के मुताबिक हर साल लगभग दस लाख मूर्तियां नदी, तालाबों और झीलों के पानी के हवाले की जाती हैं और उन पर लगे वस्त्र, आभूषण भी पानी में चले जाते हैं। चूंकि ज़्यादातर मूर्तियां पानी में न घुलने वाले प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी होती हैं और उन्हें विषैले एवं पानी में न घुलने वाले अविघटनशील रंगों से रंगा जाता है, इसलिए हर साल इन मूर्तियों के विसर्जन के बाद पानी की जैविक ऑक्सीजन मांग तेज़ी से घट जाती है जो जलचर जीवों के लिए कहर बनता है। कुछ साल पहले मुंबई से वह विचलित करने वाला समाचार मिला था जब मूर्तियों के धूमधाम से विसर्जन के बाद जुहू समुद्र तट पर लाखों की तादाद में मरी मछलियां पाई गई थीं।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिल्ली में यमुना नदी का अध्ययन इस सम्बंध में आंखें खोलने वाला रहा है कि किस तरह नदी का पानी प्रदूषित हो रहा है। बोर्ड के निष्कर्षों के मुताबिक नदी के पानी में पारा, निकल, जस्ता, लोहा, आर्सेनिक जैसी भारी धातुओं का अनुपात दिनोंदिन बढ़ रहा है। दिल्ली के जिन-जिन इलाकों में मूर्तियां बहाई जाती हैं वहां के पानी के नमूनों का अध्ययन करने के बाद बोर्ड ने पाया कि मूर्तियां बहाने से पानी की चालकता, ठोस पदार्थों की मौजूदगी और जैविक ऑक्सीजन मांग बढ़ जाती है और घुलित ऑक्सीजन कम हो जाती है। पांच साल पहले बोर्ड ने अनुमान लगाया था कि हर साल दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में लगभग 1800 बड़ी मूर्तियां बहाई जाती हैं। और बोर्ड का निष्कर्ष था कि इस कर्मकाण्ड से नदी को स्थायी नुकसान हो रहा है और प्रदूषण फैल रहा है।

सबसे ज़्यादा जल प्रदूषण प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों के विसर्जन से होता है। इन मूर्तियों में प्रयुक्त रासायनिक रंगों से भी जल प्रदूषण ज़्यादा होता है। पूजा के दौरान पैदा हुआ ऐसा कचरा, जिसकी रिसाइक्लिंग नहीं की जा सकती, उससे भी जल प्रदूषण अधिक मात्रा में होता है। पिछले कई सालों में यह बात प्रकाश में आई है कि जल प्रदूषण सबसे ज़्यादा प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी मूर्तियों के विसर्जन से होता है। ये सभी मूर्तियां झीलों, नदियों एवं समुद्रों में बहाई जाती हैं, जिससे जलीय वातावरण में समस्याएं पैदा होती हैं। प्लास्टर ऑफ पेरिस ऐसा पदार्थ है जो कभी नष्ट नहीं होता है। इससे वातावरण में प्रदूषण की मात्रा के बढ़ने की संभावना बहुत अधिक है। प्लास्टर ऑफ पेरिस, कैल्शियम सल्फेट का एक रूप होता है, जिसे जिप्सम से बनाया जाता है। दूसरी ओर, ईको फ्रेंडली मूर्तियां चिकनी मिट्टी से बनती हैं, जिन्हें विसर्जित करने पर वे आसानी से पानी में घुल जाती हैं। लेकिन अब इन्हीं मूर्तियों को रासायनिक रंगों से रंगा जाता है। ये रंग पानी को प्रदूषित करते हैं।

बैंगलुरू में मूर्तियों से होने वाले जल प्रदूषण के अध्ययन से पता चला है कि

- पानी में अम्ल की मात्रा बढ़ती है।
- कुल घुलित ठोस पदार्थ में 100 प्रतिशत की वृद्धि होती है।
- मूर्तियों के विसर्जन के दौर में दिन में पानी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है और रात में घट जाती है।

चूंकि मूर्ति विसर्जन हमारी श्रद्धा, आस्था और भावनाओं से जुड़ा है, इसके लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

- झील, नदी या समुद्र में मूर्तियों का विसर्जन करने से अच्छा है कि उन्हें सरकार द्वारा बनाई गईं बड़ी पानी की टंकियों में प्रवाहित करें।
- मूर्तियों को प्राकृतिक सामग्रियों से तैयार किया जाए।
- यदि संभव हो तो मूर्तियों का उपयोग दुबारा किया जाए।

- यदि कोई व्यक्ति प्लास्टर ऑफ पेरिस का उपयोग कर रहा है तो उसे पानी में बहाने की बजाय, उस पर पानी की दो-चार बूंदें सांकेतिक तौर पर प्रवाह के रूप में डाली जाएं। इससे किसी की भावना को ठेस नहीं पहुंचेगी और वातावरण भी सुरक्षित रहेगा।

नदियों में मूर्तियों के साथ अन्य कई सामग्रियां, फल-फूल, अगरबत्ती एवं पूजा के कपड़े भी प्रवाहित किए जाते हैं। आजकल लोग थर्माकोल से बने मंदिर भी जल में प्रवाहित करते हैं। इस संदर्भ में भी कुछ विकल्प अपनाकर प्रदूषण से बचा जा सकता है।

- अविघटनशील चीज़ों का प्रयोग न करें।
- सभी विघटन-योग्य चीज़ों को कम्पोस्ट करें।
- फलों को प्रवाहित करने की बजाय उन्हें गरीबों में दान करें।
- फूलों को रिसाइकल करके, उनसे हस्त निर्मित कागज़ एवं अन्य उत्पाद बनाएं। ***(स्रोत फीचर्स)***